# तृतीय अधिकरणम्

## प्रथमोऽध्याय:

# वाच्य प्रकरण

संस्कृत में तीन वाच्य होते हैं – 1. कर्तृवाच्य, 2. कर्मवाच्य, 3. भाववाच्य।

**1. कर्तृवाच्य :-** जिस वाच्य में ''कर्त्ता'' प्रधान होता है उसे ''कर्मवाच्य'' कहते हैं। यहाँ कर्म के अनुसार ही क्रिया का पुरुष वचन तथा लिङ्ग होते हैं। कर्मवाच्य में – कर्त्ता में तृतीया और कर्म में प्रथम आती है और क्रिया आत्मनेपद की होती है। जैसे :-

तेन पुस्तकं पठ्यते = उसके द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।

**3. भाववाच्य :-** जिस वाक्य में कर्म न हो उसे भाववाच्य कहते हैं। भाववाच्य में – कर्त्ता में तृतीया और क्रिया में प्रथम पुरुष का एक वचन आत्मेनपद में ही होगा जैसे :-

शिशुना शय्यते = बालक से सोया जाता है।

**रूप-रचना :-** कर्मवाच्य और भाववाच्य में – लट्, लोट्, लङ्ग और विधिलिङ्ग लकारों में धातु और प्रत्यय के मध्य ''य'' विकरण लगा दिया जाता है। जैसे :- पठ् + ते पठ् + य + ते = पठ्यते।

''लृट्'' लकार में ''य'' विकरण नहीं लगाया जाता।

धातुरूप- जैसे :- **[ पठ् ] = पढ़ना**

| | (लट्) | | | (लोट्) | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | एक व० | द्विव० | बहु व० | एक व० | द्विव० | बहु व० |
| प्र० पु० | पठ्यते | पठ्येते | पठ्यन्ते | पठ्यताम् | पठ्यताम् | पठयन्ताम् |
| म ० पु० | पठ्यसे | पठ्येथे | पठ्यध्वे | पठ्यस्व | पठ्येथाम् | पठ्यध्वम् |
| उ० पु० | पठ्ये | पठ्यावहे | पठ्यामहे | पठ्यै | पठ्यावहै | पठ्यामहै |
| | (लङ्) | | | (विधिलिङ्) | | |
| प्र० पु० | अपठ्यत | अपठ्येताम् | अपठ्यन्त | पठ्येत | पठ्येयाताम् | पठ्येरन् |
| म० पु० | अपठ्यथा: | अपठ्येथाम् | अपठ्यध्वम् | पठयेथा: | पठ्येयाथाम् | पठ्येध्वम् |
| उ० पु० | अपठ्ये | अपठ्यावहि | अपठ्यामहि | पठ्येय | पठ्येवहि | पठ्येमहि |

**(लृट)**

| | एक व० | द्विव० | बहु व० |
|---|---|---|---|
| प्र० प० | पठिष्यते | पठिष्येते | पठिष्यन्ते |
| म० पु० | पठिष्यसे | पठिष्येथे | पठिष्यध्वे |
| उ० पु० | पठिष्ये | पठिष्यावहे | पठिष्यामहे |

### (क) कुछ प्रसिद्ध धातुओं के कर्मवाच्य में रुप

| धातु | अर्थ में | रुप | धातु | अर्थ में | रुप |
|---|---|---|---|---|---|
| गम् | जाया जाता है | गम्यते | वद् | बोला जाता है | वद्यते |
| पठ् | पढ़ा जाता है | पठ्यते | चल् | चला जाता है | चल्यते |
| खाद् | खाया जाता है | खाद्यते | क्षल् | धोया जाता है | क्षाल्यते |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| त्यज् | छोड़ा जाता है | त्यज्यते | रच् | रचना की जाती है | रच्यते |
| सेव् | सेवा की जाती है | सेव्यते | रक्ष् | रक्षा की जाती है | रक्ष्यते |
| दृश् | देखा जाता है | दृश्यते | सह् | सहा जाता है | सह्यते |
| पच् | पकाया जाता है | पच्यते | मुच् | छोड़ा जाता है | मुच्यते |
| नी | ले जाया जाता है | नीयते | रुध् | रोका जाता है | रुध्यते |
| हन् | मारा जाता है | हन्यते | ज्ञा | जाना जाता है | ज्ञायते |
| प्रच्छ् | पूछा जाता है | पृच्छयते | कथ् | कहा जाता है | कथ्यते |
| ग्रह् | पकड़ा जाता है | गृह्यते | दा | दिया जाता है | दीयते |
| चुर् | चुराया जाता है | चोर्यते | ध्रा | सूँघा जाता है | घ्रीयते |
| पा | पीया जाता है | पीयते | स्मृ | याद किया जाता है | स्मर्यते |
| वह् | उठाया जाता है | उस्यते | क्री | खरीदा जाता है | क्रीयते |
| रक्ष् | बचाया जाता है | रक्ष्यते | भक्ष् | खाया जाता है | भक्ष्यते |
| इष् | चाहा जाता है | इष्यते | दुह् | दोहा जाता है | दुह्यते |
| लिख् | लिखा जाता है | लिख्यते | स्था | ठहरा जाता है | स्थीयते |

## ( क ) कुछ प्रसिद्ध धातुओं के भाववाच्य में रूप

| धातु | अर्थ में | रुप | धातु | अर्थ में | रुप |
|---|---|---|---|---|---|
| अस् | हुआ जाता है | भूयते | स्मी | मुस्कराया जाता है | स्मीयते |
| जागृ | जाग जाता है | जागर्य्यते | भी | डरा जाता है | भीयते |
| शी | सोया जाता है | शय्यते | हस् | हंसा जाता है | हस्यते |
| वस् | रहा जाता है | उष्यते | नृत् | नाचा जाता है | नृत्यते |

वाच्य परिवर्तन

**कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में :-** इस वाच्य परिवर्तन में कर्त्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा तथा क्रिया आत्मनेपद की तथा क्रिया के वचन एवं पुरुष कर्म के अनुसार कर दिये जाते हैं। जैसे :-

| कर्तृ वाच्य | कर्मवाच्य |
|---|---|
| स गृहं गच्छति | तेन गृहं गम्यते |
| रामः ग्रामं गच्छति | रामेण ग्रामः गम्यते |
| स अजां ग्रामं नयति | तेन अजा ग्रामं नीयते |
| वत्सः दुग्धं पिबति | वस्तेन दुग्धं पीयते। |

**कर्तृ वाचक से भाववाचक में :-** इस वाच्य परिवर्तन में क्रिया का कर्त्ता सदैव तृतीयान्त तथा क्रिया सदैव आत्मनेपद प्रथम पुरुष एक वचनान्त रहती है। जैसे :-

| कर्तृ वाच्य | भाववाच्य |
|---|---|
| अहं तिष्ठामि | मयास्थीयते |
| शिशवः शेरते | शिशुभिः शय्यते |
| सा रोदिति | तया रुद्यते। |